Chapter 3 निन्दा रस

Chapter 3 Blasphemy Juice

निन्दा रस Questions and Answers, Notes, Summary

Blasphemy Juice Questions and Answers, Notes, Summary

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिएः

I. Write a reply in a word or phrase or sentence:

प्रश्न 1.

धृतराष्ट्र की भुजाओं में कौनसा पुतला जकड़ा गया था?

What statue was fastened in the arms of the wicked nation?

उत्तर:

धृतराष्ट्र की भुजाओं में भीम का पुतला जकड़ा गया था।

The statue of Bhim was fastened in the arms of the wicked nation.

प्रश्न 2.

पिछली रात ‘क’ ‘ग’ के साथ बैठकर क्या करता रहा?

What did he do by sitting with 'A' 'C' last night?

उत्तर:

पिछली रात ‘क’ ‘ग’ के साथ बैठकर निंदा करता रहा।

Last night, 'A' sat down with 'C' and condemned.

प्रश्न 3.

कुछ लोग आदतन क्या बोलते हैं?

What do some people habitually speak?

उत्तर:

कुछ लोग आदतन झूठ बोलते हैं।

Some people lie habitually.

प्रश्न 4.

लेखक के मित्र के पास दोषों का क्या है?

What do the author's friend have of defects?

उत्तर:

लेखक के मित्र के पास दोषों का ‘केटलाग’ है।

The writer's friend has a 'kettleag' of defects.

प्रश्न 5.

लेखक के मन में किसके प्रति मैल नहीं रहा?

Who has no scum in the author's mind?

उत्तर:

लेखक के मन में अपने निंदक मित्र के प्रति मैल नहीं रहा।

The author did not have any scum for his cynical friend.

प्रश्न 6.

निन्दकों की जैसी एकाग्रता किनमें दुर्लभ है?

Which of the blasphemers is rare in concentration?

उत्तर:

निन्दकों की जैसी एकाग्रता भक्तों में दुर्लभ है।

Concentration like blasphemers is rare among devotees.

प्रश्न 7.

मिशनरी निन्दक चौबीसों घंटे निन्दा करने में किस भाव से लगे रहते हैं?

What is the spirit of missionary blasphemy in round the clock?

उत्तर:

मिशनरी निन्दक चौबीसों घंटे निन्दा करने में पवित्र भाव से लगे रहते हैं।

Missionary blasphemers are holy in blasphemy round the clock.

प्रश्न 8.

निन्दा, निन्दा करनेवालों के लिए क्या होती है?

What happens to blasphemers?

उत्तर:

निन्दा, निन्दा करनेवालों के लिए टॉनिक होती है।

Blasphemy is a tonic for blasphemers.

प्रश्न 9.

निन्दा का उद्गम किससे होता है?

Who is the origin of blasphemy?

उत्तर:

निन्दा का उद्गम ‘हीनता’ और ‘कमजोरी’ से होता है।

Blasphemy originates from 'inferiority' and 'weakness'.

प्रश्न 10.

कौन बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है?

Who is considered to be big jealous?

उत्तर:

इन्द्र बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है।

Indra is considered to be very jealous.

अतिरिक्त प्रश्नः

Additional Questions:

प्रश्न 11.

“निंदा रस’ पाठ के लेखक कौन है?

Who is the author of the "blasphemous juice" text?

उत्तर:

‘निंदा रस’ पाठ के लेखक हरिशंकर परसाई हैं।

Harishankar Parsai is the author of the text 'Blasphemous Juice'.

प्रश्न 12.

कौन कई महीने बाद आये थे?

Who came several months later?

उत्तर:

‘क’ कई महीनों बाद आये थे।

'A' came after several months.

प्रश्न 13.

किस प्रकार का निंदक बड़ा दुःखी होता है?

What kind of cynicism is a big grieving?

उत्तर:

ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निंदक बड़ा दुखी रहता है।

Cynics motivated by jealousy are very unhappy.

प्रश्न 14.

मनुष्य किससे दबता है?

Whom does man do?

उत्तर:

मनुष्य अपनी हीनता से दबता है।

Man is under his inferiority.

प्रश्न 15.

किसने ‘निंदा सबद रसाल’ कहा है?

Who has called the ' blasphemy Sada Rasal '?

उत्तर:

‘सूरदास’ ने ‘निंदा सबद रसाल’ कहा है।

'Surdas' has called 'Blasphemy Sabad Rasal'.

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिएः

II. Write answers to the following questions:

प्रश्न 1.

धृतराष्ट्र का उल्लेख लेखक ने क्यों किया है?

Why has the author mentioned the imperious nation?

उत्तर:

लेखक के मित्र ‘क’ ने जब हर्ष के साथ मिलने का झूठा बहाना किया तो लेखक को उसके व्यवहार पर शक हो गया। क्योंकि वह सच्चे मन से खुश नहीं था। इसलिए लेखक ने धृतराष्ट्र का उल्लेख किया कि उसने भीम को दिखावे की खुशी में अपने पास बुलाया, जब कि मन में सोचा कुछ और थी।

When the author's friend 'A' falsely pretended to meet with Joy, the author doubted his behaviour. Because he was not happy with the true heart. So the author mentioned that he called Bhim in the joy of appearances, when the thought in mind was something else.

प्रश्न 2.

निन्दा की महिमा का वर्णन कीजिए।

Describe the glory of blasphemy.

उत्तर:

निन्दक लोग जहाँ कहीं इकट्ठे हो जाते हैं, वहाँ वे दूसरों की निन्दा में इतने तन्मय हो जाते हैं कि उन्हें अन्यों की चिन्ता ही नहीं होती। जितनी एकाग्रता और तन्मयता कोई भक्त भी भगवान के ध्यान में नहीं लगाता हो, उतनी ये निन्दा करने में लगा देते हैं। निन्दकों की-सी एकाग्रता, परस्पर आत्मीयता, निमग्नता भक्तों में दुर्लभ है।

Wherever the blasphemers gather, they become so reproached that they are not bothered by others. The more concentration and flexibility a devotee does not put to god's attention, the more they are able to condemn. The concentration of blasphemers, mutual intimacy, submergence is rare among devotees.

प्रश्न 3.

‘मिशनरी’ निन्दक से लेखक का क्या तात्पर्य है?

What does the author mean by a 'missionary' blasphemer?

उत्तर:

मिशनरी निन्दक से लेखक का तात्पर्य उन निंदकों से है जो पूरी पवित्र भावना से निन्दा के कार्य में लगे रहते हैं। उनका किसी से वैर नहीं, द्वेष नहीं। वे किसी का बुरा नहीं सोचते। पर चौबीसों घंटे वे निंदा कार्य में बहुत पवित्र भाव से लगे रहते हैं। उनकी नितांत निर्लिप्तता, निष्पक्षता इसी से मालूम होती है कि वे प्रसंग आने पर अपने आप की पगड़ी भी उसी आनंद से उछालते हैं जिस आनंद से अन्य लोग दुष्मनों की। निन्दा इनके लिए ‘टॉनिक’ होती है।

The missionary blasphemy refers to the blasphemers who are engaged in the act of blasphemy in a holy spirit. They have no malice, no malice. They don't think of anybody bad. But round the clock, they are very sacred in the blasphemy work. Their utter inalions, fairness, is known to them that when they come to the context, they also bounce their turbans with the same joy that other people have. Blasphemy is a ' tonic ' for them.

प्रश्न 4.

निन्दकों के संघ के बारे में लिखिए।

Write about the union of blasphemers.

उत्तर:

जिस प्रकार मजदूरों की ट्रेड-यूनियन होती है, वैसे निन्दकों का भी एक संघ होता है। संघ के सदस्य इधर-उधर की खबरें लाकर, संघ को सौंपते हैं। यह कच्चा माल माना जाता है। संघ इसे पक्का माल बनाकर, सभी सदस्यों को इस तरह बाँटते हैं, जैसे उनकी दृष्टि में वह ‘बहुजन-हिताय’ कार्य हो।

Just as workers have trade unions, there is also a union of blasphemers. The members of the Union bring the news here and there and hand over it to the Union. It is considered to be raw material. The Unions share it with pucca goods, to all the members in such a way that it is a ' bahujan-hitya ' act in their eyes.

प्रश्न 5.

ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दकों की कैसी दशा होती है?

What is the condition of blasphemers motivated by jealousy?

उत्तर:

बुरे कर्मों में लगे व्यक्ति कभी सुखी नहीं हो सकते। वही स्थिति निन्दकों की होती है। इनका अधिकांश समय ईर्ष्या, द्वेष से युक्त निन्दा करने में लगा रहता है। जैसे रात को कुत्ता चाँद को देखकर भौंकता है, वैसे ही निन्दक भौंकता है।

People engaged in bad deeds can never be happy. The same situation is of blasphemers. Most of their time is in jealousy, malice-rich blasphemy. Just as the dog barks at the night, the blasphemer barks.

प्रश्न 6.

निन्दा को पूँजी बनानेवालों के बारे में लेखक ने क्या कहा है?

What has the author said about those who make blasphemy?

उत्तर:

जिन लोगों के पास निन्दा के अलावा और कोई दूसरी सम्पत्ति नहीं होती। वे लोग इसी पूँजी या सम्पत्ति से अपना कारोबार बढ़ाते रहते हैं। उनका यह कलंकित कार्य ही उनकी प्रतिष्ठा मानी जाती है। वे सदा उसी का पारायण करते हैं।

People who have no other property other than blasphemy. They continue to grow their business with this capital or property. Their tainted work is considered to be their prestige. They always follow him.

प्रश्न 7.

‘निन्दा रस’ निबंध का आशय अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

Explain the meaning of the ' blasphemy juice ' essay in your own words.

उत्तर:

निन्दक निन्दा करके ‘निन्दा-रस’ का आनन्द लेता है। निन्दक दूसरों की निन्दा में सुख भोगता है। निन्दा के भी नमूने हैं। जैसे- कुछ लोग ईर्ष्या से निन्दा करते हैं, कुछ अपनी प्रसिद्धि के लिए निन्दा करते हैं, कुछ बिना कारण से ही निन्दा करते हैं। ऐसे लोगों के स्वभाव का उजागर करना ही लेखक का उद्धेश्य है।

Blasphemy condemns and enjoys 'blasphemy-ras'. The blasphemer enjoys happiness in the blasphemy of others. There are also samples of blasphemy. As some people condemn with envy, some condemn their fame, some condemn for no reason. It is the author's objective to highlight the nature of such people.

अतिरिक्त प्रश्नः

Additional Questions:

प्रश्न 8.

लेखक अपने मित्र मिस्टर ‘क’ के बारे में क्या कहते हैं?

What does the author say about his friend Mr. 'A'?

उत्तर:

परसाई जी ‘क’ के बारे में कहते हैं कि वे कई महीने बाद आये थे। उनके मित्र ने उन्हें बताया कि ‘क’ अपनी ससुराल आया है और ‘ग’ के सामने तुम्हारी दो-तीन घंटे निंदा करता रहा। लेकिन जब ‘क’ लेखक से मिलने आता है तो झूठ कहता है- ‘अभी सुबह की गाड़ी से उतरा और एकदम तुमसे मिलने चला आया।’ आते ही झूठ बोला। उसने आते ही ‘ग’ की निन्दा आरंभ कर दी। उसने ‘ग’ की ऐसे गाढ़े काले तारकोल से तस्वीर खींची कि मैं यह सोचकर काँप उठा कि ऐसी ही काली तस्वीर मेरी ‘ग’ के सामने इसने कल शाम को खींची होगी।

Parsai ji says about 'A' that he came several months later. His friend told him that ' a ' has come to his in-laws and condemned you for two or three hours in front of ' C '. But when ' a ' comes to meet the author, the lie says, "Just landed in the morning and went to meet you. He lied. He came and started condemning ' C '. He drew a picture of 'C' with such a thick black tar that I trembled thinking that a similar black photograph would have been drawn in front of my 'C' last evening.

प्रश्न 9.

निंदा के उद्गम के बारे में हरिशंकर परसाई जी के विचार क्या हैं?

What are the views of Harishankar Parsai ji about the origin of condemnation?

उत्तर:

परसाई जी कहते हैं कि निन्दा का उद्गम ही हीनता और कमजोरी से होता है। मनुष्य अपनी ही हीनता से दबता है। वह दूसरों की निन्दा करके ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट है और वह उनसे अच्छा है। उसके अहं की इससे तुष्टि होती है। बड़ी लकीर को कुछ मिटाकर ही छोटी लंकीर बड़ी बनती है।

Parsai ji says that blasphemy is the origin of inferiority and weakness. Human beings are in their own inferiority. He condemns others and feels that they are all bad and that he is better than them. His ego is satisfied with it. By erasing the big line, the small lanker becomes bigger.

प्रश्न 10.

निंदा की प्रवृत्ति कैसे बढ़ती जाती है?

How does the tendency of condemnation increase?

उत्तर:

जैसे-जैसे कर्म क्षीण होता जाता है वैसे-वैसे निन्दा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। इन्द्र बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है, क्योंकि वह निठल्ला है। स्वर्ग में देवताओं को बिना उगाया अन्न, बे बनाया महल और बिन बोये फल मिलते हैं। बिना कर्म से उन्हें अप्रतिष्ठित होने का डर बना रहता है इसलिए कर्मशील, मेहनती मनुष्यों से उन्हें ईर्ष्या, जलन होने लगती है। ऐसे कामचोर लोग ही निंदक में बदल जाते हैं।

As karma fades, the tendency of blasphemy increases. Indra is considered to be very jealous because he is a nithalla. In heaven, the deities receive un grown grain, bay-made palaces and bin-boy fruits. Without karma, they are afraid of being undispresented, so passive, hardworking human beings begin to envy, jealousy. Such doodle people turn into cynics.

III. निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहा?

III. Who said the following sentence to whom?

प्रश्न 1.

“यार आजकल लोग तुम्हारे बारे में बहुत बुरा-बुरा कहते हैं।”

"Man nowadays people say very bad about you.

उत्तर:

संघ के एक अध्यक्ष ने अपने मित्र से कहा।

A president of the union said to his friend.

प्रश्न 2.

“वे अगर बंबई जा रहे हैं और उनसे पूछे तो वे कहेंगे कलकत्ता जा रहा हूँ।”

"If they are going to Bombay and ask them, they will say, "I am going to Calcutta.

उत्तर:

एक रिश्तेदार ने लेखक से कहा।

A relative told the author.

प्रश्न 3.

“निंदा सबद रसाल।”

"Blasphemy sabad rasal."

उत्तर:

सूरदास ने पाठकों से कहा है।

Surdas has told readers.

III. ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए:

III. Make a reference explanation:

प्रश्न 1.

आ बेटा, तुझे कलेजे से लगा लूँ।

Come, son, put you out of the liver.

उत्तर:

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘निन्दा रस’ नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हैं।

The context: The text presented is taken from the text of our textbook 'Literary Splendour' called 'Blasphemy Ras'. Its author is Harishankar Parsai.

संदर्भ : लेखक का मित्र ‘क’ लेखक के साथ छल पूर्वक दिखावे की खुशी व्यक्त करते हुए यह वाक्य कहता है।

Reference: The author's friend 'A' says this sentence expressing the joy of deceitful appearances with the author.

स्पष्टीकरण : लेखक सुबह की चाय पीकर अखबार देख रहे थे कि उनके एक मित्र तूफान की तरह कमरे में घुसकर उन्हें अपनी भुजाओं में जकड़ा तो उन्हें तो धृतराष्ट्र की भुजाओं में जकड़े भीम के पुतले की याद आ गयी। तब अंधे धृतराष्ट्र ने टटोलते हुए पूछा था “कहाँ है भीम? आ बेटा, तुझे कलेजे से लगा लूँ।”

Explanation: The author was drinking morning tea and watching the newspaper that one of his friends entered the room like a storm and put them in his arms, and he remembered the effigies of Bhim in the arms of the nation. Then the blind nation groped and asked, "Where is Bhim? Come, son, put you out of the liver. "

प्रश्न 2.

अभी सुबह की गाड़ी से उतरा और एकदम तुमसे मिलने चला आया।

Just landed in the morning and went to meet you.

उत्तर:

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘निन्दा रस’ नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हैं।

The context: The text presented is taken from the text of our textbook 'Literary Splendour' called 'Blasphemy Ras'. Its author is Harishankar Parsai.

संदर्भ : लेखक को ज्ञात है कि वह कल रात ही आ गया था। लेकिन उसे अकारण ही झूठ बोलने की आदत है।

Reference: The author knows that he arrived only last night. But he has a habit of lying unprovoked.

स्पष्टीकरण : लेखक जानता है कि ‘क’ तो कल रात ही आ गया था। वह झूठ बोल रहा है कि अभी-अभी गाड़ी से उतरकर सीधे उससे मिलने आया है। लेखक को ज्ञात है कि वह अकारण ही झूठ बोलता है और उसको झूठ बोलने की आदत पड़ गई है।

Explanation: The author knows that 'A' had arrived only last night. He is lying that he has just come out of the car and come to meet him directly. The author knows that he speaks a lie for an unprovoked and has a habit of lying.

प्रश्न 3.

कुछ लोग बड़े निर्दोष मिथ्यावादी होते हैं।

Some people are very innocent misogynists.

उत्तर:

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘निन्दा रस’ नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हैं।

The context: The text presented is taken from the text of our textbook 'Literary Splendour' called 'Blasphemy Ras'. Its author is Harishankar Parsai.

संदर्भ : लेखक यह वाक्य पाठकों से कहता है कि कुछ लोग आदतन, स्वभाव के कारण झूठ बोलते हैं।

Reference: The author tells readers that some people lie habitually because of nature.

स्पष्टीकरण : कुछ लोग हमेशा झूठ बोलते हैं। इससे उनको कोई लाभ भी नहीं होता, फिर भी झूठ बोलेंगे। ऐसे लोगों को लेखक ने निर्दोष मिथ्यावादी कहा है।

Explanation: Some people always lie. It does not benefit them, yet they will lie. Such people have been called innocent misogynists by the author.

प्रश्न 4.

निन्दा का उद्गम ही हीनता और कमजोरी से होता है।

The origin of blasphemy is from inferiority and weakness.

उत्तर:

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘निन्दा रस’ नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हैं।

The context: The text presented is taken from the text of our textbook 'Literary Splendour' called 'Blasphemy Ras'. Its author is Harishankar Parsai.

संदर्भ : लेखक कहता हैं कि निन्दा करने वाले ज्यादातर ईर्ष्या वश किसी की निन्दा करते हैं, उनमें हीनता की भावना होती है।

Context: The author says that most blasphemers condemn someone with jealousy, they have a sense of inferiority.

स्पष्टीकरण : लेखक कहते हैं कि हीनता और कमजोरी की भावना से निन्दा की उत्पत्ति होती है। ऐसे लोग सदा दूसरों की बुराई करते हैं। ऐसे लोग अपने को अच्छा और दूसरों को बुरा मानते हैं।

Explanation: The author says that a sense of inferiority and weakness leads to blasphemy. Such people always do evil to others. Such people consider themselves good and bad to others.

प्रश्न 5.

ज्यों-ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है त्यों-त्यों निन्दा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है।

As karma is eroded, the tendency of blasphemy increases.

उत्तर:

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘निन्दा रस’ नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हैं।

The context: The text presented is taken from the text of our textbook 'Literary Splendour' called 'Blasphemy Ras'. Its author is Harishankar Parsai.

संदर्भ : लेखक यहाँ निन्दा करने वालों के स्वभाव के बारे में कह रहे हैं।

Reference: The authors are saying here about the nature of the blasphemers.

स्पष्टीकरण : निखटू आदमी हीन भावनाओं से ग्रसित हो जाता है। तब वह केवल निन्दा करना ही अपना परम कर्तव्य समझने लगता है। धीरे-धीरे उसकी वह आदत बढ़ती जाती है।

Explanation: A man suffers from inferior emotions. Then he seems to understand his ultimate duty only to blaspheme. Gradually, that habit increases.

अतिरिक्त प्रश्नः

Additional Questions:

प्रश्न 6.

“बड़ा खराब ज़माना आ गया है”

"It's been a

उत्तर:

bad

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘निन्दा रस’ नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हैं।

time" Answer: Context: The text presented is taken from the text of our textbook 'Literary Splendour' called 'Blasphemy Ras'. Its author is Harishankar Parsai.

संदर्भ : परसाई जी निंदकों के चरित्र को उजागर कर रहे हैं। किसी को भी बदनाम करना वे अपना जीवन उद्देश्य बना लेते हैं।

Reference: Parsai ji is highlighting the character of the cynics. To defame anyone, they make their life a purpose.

स्पष्टीकरण : कुछ लोगों की आदत दूसरों की निन्दा करके स्वयं को संत साबित करने की होती है। उनके जीवन की एकमात्र पूँजी ही निन्दा होती है। परसाई कहते हैं- आप इनके पास बैठिए तो वे कहना शुरु करते हैं ‘बड़ा खराब जमाना आ गया है। तुमने सुना? फलाँ और अमुक…।’ अर्थात् यह लोग किसी के मिलते ही जिस-तिस की सत्य कल्पित कलंक कथा सुनाना शुरू कर देते हैं।

Explanation: Some people have the habit of condemning others and proving themselves to be saints. The only capital of their lives is blasphemy. Parsai says, "If you sit near them, they start saying," It is a big bad time. You heard? And so.... That is, these people begin to tell the true true stigma of someone.

प्रश्न 7.

“इस प्रकार का निंदक बड़ा दुःखी होता है।”

"This kind of cynicism is a great grieve.

उत्तर:

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘निन्दा रस’ नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हैं। ।

Context: The text presented is taken from the text of our textbook 'Literary Splendour' called 'Blasphemy Ras'. Its author is Harishankar Parsai.

संदर्भ : परसाई जी कहते हैं कि मिशनरी निंदकों के अलावा दूसरों की प्रगति से जलकर निंदा करने वाला वर्ग भी होता है।

Reference: Parsai ji says that apart from missionary cynics, there is a class of condemning others from the progress of others.

स्पष्टीकरण : परसाई जी कहते हैं कि मिशनरी भाव से निन्दा करने वाले व्यक्तियों के अलावा एक और वर्ग होता है जो ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दा करता है। दूसरों की प्रगति से, कर्म से उसमें ईर्ष्या का भाव पैदा होता है। परसाई जी कहते हैं इस प्रकार का निन्दक बड़ा दुःखी होता है। वह ईर्ष्या-द्वेष से दिन-रात जलता रहता है। फिर वह दूसरों की निन्दा करके कुछ शान्ति का अनुभव करता है। ऐसा निन्दक बड़ा दयनीय होता है।

Explanation: Parsai ji says that there is another class other than those who condemn the missionary spirit, which is a blasphemy motivated by jealousy. With the progress of others, karma creates a sense of envy. This kind of blasphemy is a great grieve, says Parsai Ji. He burns day and night with jealousy. Then He condemns others and experiences some peace. Such a blasphemy is very pathetic.

प्रश्न 8.

“अद्भुत है मेरा मित्र। उनके पास दोषों का ‘केटलाग’ है।”

"Wonderful is my friend. They have a ' kettleag ' of defects.

उत्तर:

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘निन्दा रस’ नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हैं।

Context: The text presented is taken from the text of our textbook 'Literary Splendour' called 'Blasphemy Ras'. Its author is Harishankar Parsai.

संदर्भ : लेखक यहाँ निन्दक की निन्दा करने की क्षमता के बारे में बता रहे हैं।

Reference: The authors are here to explain the ability to condemn the blasphemy.

स्पष्टीकरण : लेखक का एक मित्र निन्दा करने में माहिर है। वह अपनी ससुराल पिछले दिन आया हुआ है लेकिन लेखक को मिलते ही कहता है ‘अभी सुबह की गाड़ी से उतरा हूँ और तुमसे मिलने चला आया।’ उसने आते ही ‘ग’ की निन्दा आरंभ कर दी। लेखक तब कहता है, ‘अद्भुत है मेरा यह मित्र। उसके पास दोषों का ‘केटलाग’ है। मैंने जिसका भी नाम लिया उसको निन्दा की तलवार से काटता चला गया।

Explanation: A friend of the author is adept at blasphemy. He has come to his in-laws last day but says to the author, "I have just landed in the morning and went to meet you. He came and began to condemn ' C '. The author then says, ' This friend of mine is wonderful. He has a ' kettleag ' of defects. Whatever name I took, he was cut off with the sword of blasphemy.

प्रश्न 9.

“बड़ी लकीर को कुछ मिटाकर छोटी लकीर बड़ी लकीर बनती है।”

"By erasing the big line, a small line becomes a big line.

उत्तर:

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘निन्दा रस’ नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हैं।

Context: The text presented is taken from the text of our textbook 'Literary Splendour' called 'Blasphemy Ras'. Its author is Harishankar Parsai.

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य में लेखक बता रहे हैं कि किस तरह निन्दक अपनी हीनता को छिपाने के लिए परनिंदा को अग्रसर होते हैं।

Reference: In the sentence presented, the authors are telling how the blasphemers move to condemn to hide their inferiority.

स्पष्टीकरण : परसाई जी कहते हैं कि जो व्यक्ति किसी बात में अक्षम होता है तो इससे उसमें एक हीनता-बोध की भावना बैठ जाती है। ऐसे में अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए वह दूसरों की निन्दा करता है। इससे उसके मन को संतुष्टि होती है कि बाकी सब बेवकूफ है, निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है। तब लेखक कहते हैं, ‘बड़ी लकीर को कुछ मिटाकर छोटी लकीर बड़ी बनती है। ऐसा कार्य कर्महीन व्यक्ति ही करता है।

Explanation: Parsai ji says that a person who is incapable of something has a sense of inferiority. He condemns others for hiding his weakness. It satisfies his mind that everyone else is stupid, bad and he is better than him. Then the author says, "The big line is erased and the small line becomes bigger. It is a passive person who does such a thing.

प्रश्न 10.

“यह फुरसत का काम है, इसलिए जिनके पास कुछ और करने को नहीं होता, वे इसे बड़ी खूबी से करते हैं।”

"It is a leisure job, so those who do not have to do anything else do it very well.

उत्तर:

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘निन्दा रस’ नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हैं।।

Context: The text presented is taken from the text of our textbook 'Literary Splendour' called 'Blasphemy Ras'. Its author is Harishankar Parsai.

संदर्भ : लेखक बता रहे हैं कि जिन लोगों के पास कोई काम नहीं होता वे झूठी खबरे फैलाने का काम करते हैं।

Reference: The authors are saying that those who do not have any work are used to spread false news.

स्पष्टीकरण : परसाई जी कह रहे हैं कि आजकल निन्दकों के भी संघ बन गए हैं। संघ के सदस्य जहाँ तहाँ से खबरे लाते हैं और अपने संघ के प्रधान को सौंपते हैं। संघ का प्रधान इसमें नमक मिर्च लगाकार दूसरों को बाँटने का काम करता है। लेखक कहते हैं- यह फुरसत का काम है, इसलिए जिनके पास कुछ और करने को नहीं होता, वे इसे बड़ी खूबी से करते हैं।

Explanation: Parsai ji is saying that nowadays the blasphemers have also become associations. Members of the Union where they bring news and hand over to the head of their union. The head of the Union works to distribute salt pepper to others. The author says: "It is a leisure work, so those who do not have to do anything else do it with great merit.

IV. कोष्ठक में दिए गये उचित शब्दों से रिक्त स्थान भरिएः

IV. Fill the blanks with the appropriate words in parentheses:

(पूँजी, ईर्ष्या-द्वेष, भेद-नाशक, पुतला, तूफान)

(Capital, Jealousy, Anti-Destructor, Mannequin, Storm)

प्रश्न 1.

सुबह चाय पीकर अखबार देख रहा था कि वे ………… की तरह कमरे में घुसे।

In the morning tea was watching the newspaper that they............ Like to rotate in the room.

उत्तरः

तूफान

Storm

प्रश्न 2.

छल का धृतराष्ट्र अब आलिंगन करे, तो …………. ही आगे बढ़ाना चाहिए।

If you embrace the wicked nation of deceit now, ............. Should only move forward.

उत्तरः

पुतला

Mannequin

प्रश्न 3.

निन्दा का ऐसा ही ………… अँधेरा होता है।

The same of blasphemy............ It is dark.

उत्तरः

भेद-नाशक

anti-destructor

प्रश्न 4.

……….. से प्रेरित निन्दा भी होती है।

........... There is also a blasphemy inspired by it.

उत्तरः

ईर्ष्या-द्वेष

Jealousy

प्रश्न 5.

निन्दा कुछ लोगों की ………. होती है।

Blasphemy of some people.......... occurs.

उत्तरः

पूँजी।

Capital.

V. ‘वाक्य शुद्ध कीजिए:

V. 'Purify sentences:

प्रश्न 1.

ऐसी मौके पर हम अक्सर अपने पुतले को अंधकार में दे देते हैं।

On such occasions, we often give our effigies into darkness.

उत्तरः

ऐसे मौके पर हम अक्सर अपने पुतले को अंधकार में दे देते हैं।

On such occasions, we often give our effigies into darkness.

प्रश्न 2.

पर वह मेरी दोस्त अभिनय में पूरा है।

But he is complete in acting my friend.

उत्तरः

पर वह मेरा दोस्त अभिनय में पूरा है।

But he is complete in acting my friend.

प्रश्न 3.

निन्दा का ऐसी ही महिमा है।

There is such praise of blasphemy.

उत्तरः

निन्दा की ऐसी ही महिमा है।

There is such a praise of blasphemy.

प्रश्न 4.

आपके बारे में मुझसे कोई भी बुरी नहीं कहता।

No one tells me bad about you.

उत्तरः

आपके बारे में मुझसे कोई भी बुरा नहीं कहता

No one says bad to me about you

प्रश्न 5.

सूरदास ने इसलिए ‘निन्दा सबद रसाल’ कही है।

Surdas has therefore said ' blasphemy sabad rasal '.

उत्तरः

सूरदास ने इसलिए ‘निन्दा सबद रसाल’ कहा है।

Surdas has therefore called 'Blasphemy Sabad Rasal'.

VI. अन्य लिंग रूप लिखिए:

VI. Write other gender forms:

प्रश्न 1.

पुतला, मजदूर, बेटा, पति, स्त्री।

Effigy, labourer, son, husband, woman.

उत्तरः

पुतला – पुतली

Mannequin - Pupil

मजदूर – मजदूरनी

Labour - Labour

बेटा – बेटी

Son - Daughter

पति – पत्नी

Husband - Wife

स्त्री – पुरुष

Male - Male

VII. अन्य वचन रूप लिखिए:

VII. Write other word forms:

प्रश्न 1.

भुजा, कथा, दुश्मन, घंटा, कमरा, कविता, लकीर।

Arm, narrative, enemy, gong, room, poetry, streak.

उत्तरः

भुजा – भुजाएँ

Arm - Arms

कथा – कथाएँ

Stories - Stories

दुश्मन – दुश्मन

Enemies - Enemies

घंटा – घंटे

Hour - Hour

कमरा – कमरे

Room - Room

कविता – कविताएँ

Poetry - Poems

लकीर – लकीरें

Line - Lines

VIII. मुहावरेः

VIII. Idioms:

गले लगाना = आलिंगन करना

Hug = Hugging

बेईमानी करना = धोखा देना

Dishonesty = Cheating

कल्लोल करना = शोर मचाना।

To make a kallol = shout.

निन्दा रस लेखक परिचयः

Blasphemy Juice Author Introduction:

हरिशंकर परसाईजी हिन्दी साहित्य क्षेत्र के सुप्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य साहित्यकार थे। उनका जन्म होशंगाबाद जिले के जमानी नामक स्थान में 22 अगस्त 1924 ई. में हुआ था। प्रारंभिक विद्याभ्यास मध्य प्रदेश में हुई। बाद में नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. किया। आप अध्यापन कार्य में कुशल थे। परसाई जी नियमित रूप से ‘साप्ताहिक हिन्दुस्तान’, ‘धर्मयुग’ तथा अन्य पत्रिकाओं के लिए अपनी रचनाएँ लिखते रहे। आपका निधन 10 अगस्त 1995 ई. में हुआ।

Harishankar Parsaiji was a well-known comic-satire writer of the Hindi literature sector. He was born on August 22, 1924 AD at Jamani in Hoshangabad district. The initial exercise took place in Madhya Pradesh. Later, in Hindi from Nagpur University, M.A. Done. You were proficient in teaching work. Parsai ji regularly wrote his compositions for 'Weekly Hindustan', 'Dharmayuga' and other magazines. You passed away on August 10, 1995 AD.

प्रमुख रचनाएँ – कहानी संग्रह : ‘हँसते हैं, रोते हैं’, ‘जैसे उनके दिन फिरे’। उपन्यास : ‘रानी नागफनी की कहानी’, ‘तट की खोज’। निबंध संग्रह : ‘तब की बात और थी’, ‘भूत के पाँव पीछे’, ‘बेईमान की परत’, ‘पगडंडियों का जमाना’, ‘सदाचार का तावीज़’, ‘शिकायत मुझे भी है’, ‘और अन्त में।

Major compositions – story collections: 'laugh, cry', 'like their days'. Novel: 'The Story of Queen Hawthorn', 'Exploring the Coast'. Essay collection: 'Then it was', 'Behind the Feet of Ghosts', 'Layer of Dishonest', 'The 'Trail of The Trail', 'The Talismans of Virtue', 'Complaints Are Me Too', 'And Finally'.

निन्दा रस Summary in Hindi

Blasphemy Juice Summary in Hindi

हरिशंकर परसाई ने इस व्यंग्य रचना में समाज में फैले हुए अज्ञान, अहंकार, स्वार्थ, धोखा आदि का जोरदार खंडन किया है। इनकी रचनाओं में तीखा व्यंग्य अधिक होता है। इस लेख में लेखक ने निन्दा को नवरसों के समान एक रस माना है। उनका कहना है कि निन्दा रस में हर कोई डुबकियाँ लगाकर आनंद लेता है। उनकी दृष्टि में निन्दा रस की महिमा अपार है।

Harishankar Parsai has strongly refuted the ignorance, arrogance, selfishness, deception, etc., in this satirical creation. Their writings have more pungent satire. In this article, the author has treated blasphemy as a juice like navras. He says that everyone in blasphemy juice enjoys the dubs. In his eyes, the glory of blasphemy juice is immense.

हरिशंकर परसाई कहते हैं कि उनका एक मित्र बिना बताए लेखक के घर पहुंचता है। दूसरे लोगों के बारे में घंटों तक अनाप-शनाप बककर चला जाता है। लेखक को उन लोगों से कोई वास्ता भी नहीं था। फिर भी वे अपने निन्दक मित्र की बकवास सुनते ही रहे।

Harishankar Parsai says that one of his friends reaches the author's house without assigning it. For hours, other people are unshakeable. The author did not even have any of them. Nevertheless, they listened to the nonsense of their blasphemous friend.

लेखक का मित्र बड़ा विचित्र व्यक्ति है। उसके पास कई परिचित लोगों के दोषों का भंडार है। वह हर किसी के सामने दूसरे लोगों के अवगुणों की निन्दा करता रहता है। कई लोग उस निन्दा रस का आनन्द लेते हैं।

The writer's friend is a very strange person. He has a repository of defects of many familiar people. He continues to condemn the demerits of other people in front of everyone. Many people enjoy that blasphemy juice.

चार-पाँच निन्दकों को एक जगह बिठाकर उनकी टीका-टिप्पणी सुननी चाहिए। वे सब इतनी तल्लीनता के साथ, मजेदार भाषा में दूसरों की निन्दा करने लगते हैं कि कोई भी उस महफिल से उठने का नाम नहीं लेता। निन्दक महाशय दूसरों की निन्दा करने में अपने को धन्य मानते हैं। निन्दा करना इनके लिए एक ‘टॉनिक’ है। यह टॉनिक इनकी उम्र और ताकत को बढ़ाती है।

Four or five blasphemers should sit in one place and listen to their commentary. They all begin to condemn others in a fun language with so much delirium that no one takes the name of getting up from that mahfil. The blasphemous monsieur is blessed to condemn others. Blasphemy is a 'tonic' for them. This tonic enhances their age and strength.

निन्दकों के भी संघ हैं। उन संघ के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव वगैरह पदाधिकारी भी हैं। इनमें अपने काम के प्रति लगन है, श्रद्धा है और प्रतिबद्धता भी है। निन्दकों का संगठन शक्ति और कार्य करने की पदधति निरुपम है।

There are also associations of blasphemers. The President, Vice-President, Secretary, etc., are also officials of the Union. They have a passion for their work, reverence and commitment. The organization of the condemned is the power and the padapada of working.

जो लोग हीनता और कमजोरी के शिकार हैं, वे ही दूसरों की निन्दा करने लगते हैं। निन्दा करने से इनका कोई लाभ या प्रयोजन नहीं है; परन्तु निन्दा करने में ये बड़ा सुख और आनन्द पाते हैं।

Those who are victims of inferiority and weakness begin to condemn others. They have no benefit or purpose from blasphemy; However, they find great happiness and joy in blasphemy.

निन्दा की महिमा अपार है, अपरंपार है। निन्दकों की निन्दा नहीं करनी चाहिए। महात्मा सूरदास जी ने कहा था – ‘निन्दा सबद रसाल’ अर्थात् निन्दा करना मीठे आम का स्वाद लेने के

The praise of blasphemy is immense and apranational. The blasphemers should not be condemned. Mahatma Surdas ji said, "Blasphemy Sabad Rasal", the

लेखक कहते हैं कि निन्दकों के ‘धृतराष्ट्र आलिंगन’ से बचना बड़ा कठिन है। निन्दकों के चंगुल से कोई चतुर ही बच सकता है।

author of the taste of sweet mango, says that it is very difficult to avoid the ' wicked nation hug ' of the blasphemers. A clever escape from the clutches of blasphemers.

निन्दा रस Summary in Kannada

Blasphemy Ras Summary in Kannada

निन्दा रस Summary in English

Blasphemy Ras Summary in English

This lesson by Harishankar Parsai is a strong condemnation of the ignorance, pride, selfishness and cheating prevalent in society. The criticism of Harishankar Parsai is generally scathing. Here, the author has considered criticism as one of the ‘Navarasas’. He believes that everyone takes a dip in criticism and enjoys it. In his opinion, the greatness of criticism is unbeatable.

Once, the author had an unexpected visit from his friend. The friend spent hours talking nonsense and criticizing others and then left. The author had nothing to do with the people his friend criticized. Despite this, he continued to listen to his friend’s criticism.

The author’s friend was a strange man. He had a great collection of the vices of his acquaintances. He would criticize the vices of other people behind their back. Many people enjoyed his criticism.

The author says that one must assemble four or five critics (such as his friend), and listen to their commentary and discussion. They begin to criticize others with such gracefulness and entertaining language, that one does not feel like leaving such an atmosphere. Such critics consider themselves blessed to be able to criticize others. Criticizing others is like a tonic for them. This tonic increases their lifespan and strength.

There are associations of critics. These associations have presidents, vice-presidents and members, who actually hold these posts. These people are dedicated and involved in their work. The unity and style of functioning of critics’ associations is unparalleled.

“Those who are victims of deprivation and weakness are the ones who begin to criticize others. Criticizing others does not benefit them in any way; however, these people take great pleasure in criticizing others.

The greatness of criticism is infinite; it is limitless. Therefore, one must not criticize critics. The great poet Surdas once said, “Ninda Sabada Rasaal”, meaning that criticizing is equal to eating a sweet mango.

The author says that escaping the ‘all-encompassing embrace’ of critics is a very difficult task. Only a clever person can escape the clutches of critics.

कठिन शब्दार्थः

Hard semantics:

निमग्न – लीन;

submerged - absorbed;

साइक्लोन – तेज और धूल भरी चक्कर काटती हुई आँधी;

Cyclones – sharp and dusty whirling storms;

उद्गम – प्रारम्भ;

Origin – beginning;

निकृष्ट – नीच;

bad – lowly;

मिशनरी – लगन, तत्परता एवं निपुणता से कार्य करने की भावना की ओर संकेत;

Missionaries – a sign of the spirit of acting diligently, promptly and skillfully;

बहुजन हिताय – अधिकाधिक व्यक्तियों की भलाई के लिए;

Bahujan Hitaya – for the betterment of more and more people;

धृतराष्ट्र की जकड़ – जन्मांध धृतराष्ट्र की भुजाओं में बड़ी शक्ति थी;

The grip of the wicked nation was a great force in the arms of the nation;

नागफनी – कँटीला पौधा, एक विशेष प्रकार का कैक्टस;

Hawthorn – thorny plant, a special type of cactus;

धराशायी करना – पराजित करना, जमीन पर लिटाना;

dashing – defeating, lying on the ground;

ट्रेड यूनियन – श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिए संघर्ष करनेवाला श्रमिक संगठन;

Trade unions – a labour organization that struggles to protect the interests of workers;

निठल्ला – बेकार;

Nithalla – useless;

हरगिज – बिलकुल;

Hargiz – absolutely;

अंकवार – गले लगाना, अंक पर बिठालेना (embrace);

numeral - hugging, sitting on points (embrace);

आदतन – अभ्यासबल;

habitual – practice;

जघन्य – बुरा;

heinous – bad;

तुष्टि – समाधान (satisfaction);

satisfaction;

पिलपिला – बहुत नरम।

Pilpila – very soft.